वन : मानव अस्तित्व हेतु वरदान

अशोक कुमार कश्यप
उप वन राजिक, उ०प्र० राज्य जैव विविधता बोर्ड, लखनऊ
Email: akkashyap786@gmail.com

प्राचीन काल से वन सदैव मानव–आजीविका का महत्वपूर्ण साधन रहे हैं। वनों के द्वारा जीव जन्तुओं का संरक्षण एक दूसरे के पूरक के रूप में है। भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु होने के कारण अनेकों जैव भौगोलिक क्षेत्रों का जटिल पारिस्थितिकी तन्त्र पाया जाता है। जलवायु एवं स्थान कारकों में आंशिक परिवर्तन मात्र से वनस्पतियों तथा वन्य जीव जन्तुओं की प्रजातियों में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। विभिन्न जलवायु क्षेत्र होने के कारण विश्व में पाये जाने वाले सजीव प्रजातियों में से लगभग 7.5% प्रतिनिधित्व हमारे देश में है। यह हमारे समृद्ध जैव विविधता का द्योतक है। भारत विश्व के 12 मेगा जैवविविधतापूर्ण वाले देशों में से एक है।

भारतीय उपमहाद्वीप में वर्षा रहित थार मरूस्थल है, वहीं दूसरी ओर मेघालय राज्य में सबसे अधिक वर्षा होने का विश्व रिकार्ड है। जहाँ एक ओर हिमालय है वहीं दूसरी तरफ विस्तृत समुद्री किनारा है।

वनों में सहस्त्रों प्रकार के भोज्य पदार्थ पाये जाते हैं। जिसमें करौंदा, सहजन, महुआ, शहतूत, सेमल, लसोड़ा, कैथा, गूलर, खजूर, जंगल जलेबी, ऑवला, फालसा, कुसुम, शरीफा, कटहल, बड़हल, बेल, कमरख, आम, अमरूद, जामुन, इमली, बेर प्रमुख है। आंशिक रूप से धरती के फूल (मशरूम की एक प्रजाति), कटरूआ, पिन्डोर, परोरा (करेला की एक प्रजाति) वनों में न्यून संख्या में उपलब्ध है। वनों के समीपवर्ती ग्रामवासी प्राकृतिक वनों से भोज्य पदार्थ एकत्र कर जीवन यापन कर रहे हैं।

वनों में आयुर्वेदिक चिकित्सा से सम्बन्धित औषधीय गुणों वाली प्रजातियां खैर, नीम, गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आँवला, मरोड़ फली, पीपली, जामुन, ढाक, अडूसा, अपामार्ग आदि प्रमुखता से पायी जाती हैं। आज भी परम्परागत वैद्य हकीम इन आयुर्वेदिक औषधियों द्वारा अनेकों रोगों का सफल इलाज कर स्वास्थ्य लाभ पहुँचा रहे हैं।

वनों के अस्तित्व से असंख्य जीवों तथा पक्षियों की ऐसी श्रृंखला प्राकृतिक रूप से निर्मित हो जाती है जो खाद्यान्न आदि की अभिवृद्धि हेतु निरन्तर कार्य करते रहते हैं। ये जीव हानिकारक कीटों/जीवों का भक्षण कर खाद्यान्न की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। जैव विविधता स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी प्रभावी भूमिका निभाती है। कहने में कोई अतिश्योक्ति न होगी कि वन वास्तव में मानव सभ्यता के विकास में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की तरह निरन्तर कार्य करते रहते हैं।

उद्योगीकरण, गुणोत्तर जनसंख्या वृद्वि, कीट-नाशकों का अत्याधिक प्रयोग, अशिक्षा, मनुष्य की स्वार्थपरक इच्छापूर्ति के कारण वनों का विनाश तेजी से हो रहा है। जिसके कारण बाढ़, सूखा, जलवायु परिवर्तन, सूनामी, भूकम्प आदि के रूप में दैवीय आपदाएं बढ़ रही हैं। इन आपदाओं से बचने के लिए वृक्षों का घनत्व/आच्छादन मे अभिवृद्धि ही एक मात्र विकल्प है।

राष्ट्र एवं विश्व के व्यापक हितों को दृष्टिगत रखते हुए यह नितान्त आवश्यक हो गया है कि विकास के इस दौर में प्रकृति एवं प्रगति के मध्य उचित सन्तुलन स्थापित कर मानव अस्तित्व के लिए जैव विविधता का समुचित संरक्षण एवं संवर्धन किया जाय। इसके लिए यह आवश्यक है कि जो वनस्पतियां लुप्तप्रायः तथा संकटग्रस्त होने के कगार पर है, उसके संवर्धन एवं विकास हेतु सार्थक प्रयास किए जायें।